गलघोंटू या घुर्रका रोग

परिचय

- गलघोंटू जीवाणुओं के संक्रमण से उत्पन्न एक घातक पूर्ति जीवरक्तता पशु रोग है जो ज्वर, श्वाँस की कठिनाई, गले के ब्रिस्केट की सूजन, मुख से लार तथा श्लेष्मिक झिल्लियों के रक्त रंजन के रूप में प्रकट होता है ।
- पशुओं में यह रोग प्रायः पाश्चुरेल्ला मल्टोसिडा (सीरमी विभेद बी:2) के संक्रमण से होता है। हालांकि कभी–कभी दुसरे विभेद भी बीमारी की अवस्था में सम्बन्धित होते हैं।

गलाघोंटू से ग्रसित भैंस

गलाघोंटू से ग्रसित भैंस

- गाय, भैंस एवं भेड़ में यह अति घातक है परन्तु बकरी, सूकर एवं ऊँट में भी रोग देखा गया है ।
- बाड़े में रोग की प्रभावन दर एवं प्रभावित पशुओं में मृत्यु दर चिकित्सा न मिलने की स्थिति में काफी अधिक होती है।
- रोग का प्रकोप वर्षाकाल में अधिक होता है तब यह महामारी का रूप ले सकता है, परन्तु कुपोषण, परिवहन के दबाव एवं दुष्कर मौसम में रोग कभी भी देखा जा सकता है।
- रोग की उत्पत्ति महामारी काल में संक्रमित भोजन एवं पानी ग्रहण करने से होती है परन्तु प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से संक्रमित पशु का संसर्ग रोग को जन्म दे सकता है।

लक्षण

- उच्च ताप (106–107° फा.), क्षुदा हानि, श्वॉस की कठिनाई, श्वाँस के साथ–साथ घुर्र–घुर्र की आवाज, अति अवसाद, मुख से लार का बहना, नासिका स्राव, अश्रुपातन, गर्दन एवं झूल के साथ–साथ गुदा के आस पास (पेरिनियम) की सूजन, रोग के सामान्य लक्षण है। रोग की घातकता कम होने की स्थिति में निमोनिया, दस्त या पेचिस के लक्षण पाये जा सकते हैं । कालान्तर में पशु की मृत्यु हो सकती है।
- अति प्रभावित पशुओं में या समय पर उपयुक्त चिकित्सा न मिलने से पशुओं की मृत्यु हो जाती है।

चिकित्सा

- रोग होने की स्थिति में तत्काल पशु चिकित्सक से सम्पर्क करें।
- प्रभावित पशु को अन्य पशुओं से अलग करें।
- 20 मि0ली0 यूकेलिप्टिस तेल, 20 मि0ली0 मेन्था तेल, 20

गलाघोंटू से ग्रसित बकरी

ग्राम कपूर तथा 20 ग्राम अमोनियम कार्बोनेट, कुटी सौंठ 230 ग्राम को 10 ली0 उबलते पानी में डालकर पशु को भाप दें।

- 30 ग्राम खाने का सोडा, 30 ग्राम अमोनियम कार्बोनेट (नौसादर), 10 ग्राम कपूर, 50 ग्राम कुटी सौंठ को एक कि0ग्रा0 गुड़ के साथ पशु के जीभ पर चाटने के लिए लगाएँ ।
- प्रभावित गाय/भैंस को 50 ग्राम अजवाइन, 30 ग्राम सोंठ, 20 ग्राम तुलसी, 250 ग्राम गुड़ कुटी 1–2 लीटर दूध के साथ पिलायें।
- अतिघातकता की स्थिति में प्रभावित पशु को ऐंटीबायोटिक जैसे टेट्रासाइक्लीन, जेंटामाइसिन, आक्सीटेट्रासाइक्लीन या सल्फा ड्रग जैसे सल्फाडिमीडीन, ट्राईमीथोप्रिम+सल्फाथायोजोल एवं शोथ रोधी औषधियों का प्रयोग करें।

रोकथाम

- गोपशुओं तथा भैंसों में 4–6 माह की आयु पर प्राथमिक टीकाकरण करें तथा वर्षा काल प्रारम्भ होने के पहले वार्षिक टीका लगवायें।
- रोग की स्थिति में प्रभावित पशु को तत्काल स्वस्थ पशुओं से अलग करें।
- पशु बाड़े को 10% कास्टिक सोडा या 5% फिनाईल या 5% फिनाईल या 2% कापर सल्फेट (तूतिया) के घोल से विसंक्रमित करें।
- लम्बे परिवहन से पशुओं को बचायें ।
- मृत पशु के शरीर का समुचित निस्तारण करें।
- बाड़े में सफाई व्यवस्था को दुरस्त करें।
- महामारी काल में पशुओं के आवा–गमन को रोकें।
- मरे पशु के शव को भलीभांति चूने या नमक के साथ निस्तारित करें। संगरोध को कठोरता से लागू करें।

लेखक :

डॉ त्रिवेणी दत्त, संयुक्त निदेशक (शैक्षणिक), समविश्वविद्यालय
डॉ अशोक कुमार तिवारी, प्रधान वैज्ञानिक एवं विभागाध्यक्ष, जैविक मानकीकरण विभाग
डॉ रूपसी तिवारी, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी एटिक
डॉ बब्लू कुमार, वरिष्ठ वैज्ञानिक, जैविक उत्पाद विभाग

भाकृअनुप ICAR

NAHEP

THE WORLD BANK
IBRD • IDA | WORLD BANK GROUP

IVRI

कास्ट– एडवान्सड सेन्टर फॉर लाइवस्टॉक हैल्थ
भाकृअनुप–भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, समविश्वविद्यालय, इज्जतनगर–243 122, उ.प्र.